# (जीवन एवं साहित्यिक परिचय)

**कक्षा-12** साहित्यिक एवं सामान्य हिन्दी

# [कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर]

## जीवन परिचय-

👉 Most Imp.

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का जन्म सन् 1906 ई0 में देवबन्द (सहारनपुर) में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता का नाम रामदत्त मिश्र था।

'प्रारम्भिक शिक्षा ठीक प्रकार नहीं हो पाई इन्होने खुर्जा के एक संस्कृत पाठशाला में शिक्षा प्राप्त की। राष्ट्रीय नेता आसफ अली का भाषण सुना तथा प्रभावित होकर आन्दोलन में कूद पड़े, कई बार जेल यात्राएँ भी की। स्वतन्त्रता के पश्चात् पत्रकारिता में लग गए साहित्य की सेवा 'करते हुए सन् 1995 ई0 को पंचतत्व में लीन हो गए।

## साहित्यिक परिचय-

प्रभाकर जी रिपोर्ताज लेखन, निबन्ध लेखन एवं संस्मरण लेखन में सिद्धहस्त थे। प्रभाकर जी ने 'नया जीवन' एवं 'विकास' नामक दो प्रसिद्ध समाचार पत्रों का सम्पादन किया। महके

आँगन चहके द्वार इनकी एक महत्वपूर्ण कृति है। प्रभाकर जी के कुल 9 ग्रन्थ प्रकाशित हुए।

## कृतियाँ / रचनाएँ-

### (i) रेखाचित्र-

→नई पीढ़ी के विचार

→ जिन्दगी मुस्कराई

→ माटी हो गई सोना

→ भूले विसरे चेहरे

### (ii) लघु-कथा-

→ आकाश के तारे

→धरती के फूल

### (iii) संस्मरण-

→ दीप जले शंख बजे

### (v) ललित निबन्ध -

→ क्षण बोले कण मुस्काए

→ बाजे पायलिया के घुँघरू

## भाषा-शैली-

प्रभाकर जी की भाषा तत्सम प्रधान, शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। भावात्मक, वर्णनात्मक, नाटकीय शैली का प्रयोग किया है।

## काव्य ट्रिक : जीवन परिचय

1906 में जन्म लिए कन्हैयालाल ।
देव-बन्द में रह रहें, रामदत्त के लाल ॥

प्रा0 शिक्षा नहीं पाए ठीक प्रकार |
बाद में खुर्जा में पढ़े छूटी परीक्षा यार ॥

आन्दोलन में कूदकर देश भक्ति के हेतु ।
पूर्ण समर्पित कर दिया, जीवन जो था शेष ॥

पत्रकारिता साहित्य में कर्मठ संघर्षशील।
95 सन् मई नौ, पंचतत्व के झील ॥

**कृतियाँ-**

मिश्र नई पीढ़ी के विचारा | धरती के फूल आकाश के तारा,
दीप जले शंख बजे सदा ही | कण बोले और क्षण मुसकाहीं ,
भूले बिसरे चेहरे खोना | माटी हो गई बिल्कुल सोना ॥
यूँ जिंदगी मिश्र मुस्काई काई | पायलिया के घुँघरू बजाई |
सम्पादन ज्ञानोदय कीन्हा | नया जीवन धरती को दीन्हा |
महके आँगन चहके द्वारा । राबर्ट नर्सिंग होम हमारा ॥